'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक ३२ | वाराणसी, मंगलवार, १७ मार्च, १९५९ | पचीस रुपया वार्षिक

सर्वोदय-सम्मेलन का प्रथम प्रवचन

सर्वोदयनगर (अजमेर) २७-२-'५९

आन्दोलन का उज्ज्वल अतीत और उज्ज्वल भविष्य !

विश्व-व्यापकता के संदर्भ में आन्दोलन पर विचार करें !!

सम्मेलन मेरे लिए दर्शन का आनन्द प्राप्त करने का मौका होता है। मैं यहाँ दर्शन के लिए आता हूँ। विचार-प्रचार, चर्चा-विमर्श तो मेरा रोजमर्रा चलता ही है। रोज बोलता भी रहता हूँ। चार-चार घण्टा पदयात्रा चलती है, उसमें अनगिनत चर्चाएँ होती हैं, परन्तु ऐसे ही अवसर पर कई मित्रों से मिलना होता है। साल भर में यह प्रसंग एक बार आता है। इसमें आगे क्या काम करना है, इसकी चर्चा भी होती है। मिलना भी होता है। इसीलिए मैं यहाँ आता हूँ।

साथियों की याद

हमारे साथी एक-के-बाद एक परमेश्वर के पास पहुँच रहे हैं, जिनके साथ हमने काम किया है, ऐसे साथी जा रहे हैं। श्री किशोरलाल भाई, जाजूजी, बाबा राघवदास, गोपबाबू, लक्ष्मीबाबू, भारतन, देवदास आदि सारे चले गये। सम्मेलन के नाते जब हमें मिलने का लाभ मिलता है तो यह भी पता चलता है कि हममें से कौन-कौन हैं और कौन-कौन ईश्वर के पास चले गये। कोंकण में रिवाज है कि वर्षा के बाद मित्र एक-दूसरे के यहाँ मिलने जाते हैं। वह भी इसीलिए कि बारिश के बाद पता चले कि कौन जीवित है और कौन नहीं है। यह यात्रा भी चल रही है, अखण्ड यात्रा! लोग जा रहे हैं, इस लोक से परलोक में। नये-नये आ रहे हैं। इस बीच हमारी भी छोटी-सी यात्रा चल रही है। इस साल दो दफा मैं बीमार पड़ा था। उसका मुझे दुःख है। आज अजमेर शहर में लोगों का मेरे ऊपर प्रेमाक्रमण हुआ तो मुझे बचपन का स्मरण हो आया। भीड़-ही-भीड़ में एक-डेढ़ मील दौड़ना भी हुआ। इस तरह अभी चल रहा है और पता नहीं यह कब तक चलता रहेगा। हमें तो उतना ही मालूम है कि जैसे गुरु नानक ने कहा है 'हुक्म रजाई चलणा, नानक लिखिया नाल' उसके हुक्म से सारा चल रहा है। यही एक विश्वास, यही आशा और यही भरोसा लेकर हम काम कर रहे हैं।

सम्मेलन की प्राप्ति

हमारी जमात काम करनेवालों की जमात है। यह एक ऐसी जमात है कि हम ज्यादा सभ्यता भी नहीं जानते हैं। सभ्यता न जाननेवालों में शिरोमणी शायद मैं ही हूँ। बापू के पास जब मैं गया था, तब मैं एक जंगली जानवर ही था। उनकी संगति से जानवरपन तो शायद मेरा मिट गया, लेकिन जंगलीपन नहीं गया। उसे वे नहीं मिटा सके। इसलिए मैं नहीं जानता कि मैत्री कैसे रखी जाती है, परन्तु असंख्य मित्र प्यार करते हैं और अकारण करते हैं। बिना कारण प्यार करनेवाले मेरे साथी बन गये हैं, वे मुझे छोड़ते ही नहीं हैं। पचीस-पचीस, तीस-तीस, चालीस-चालीस वर्ष से वे मेरे साथ हैं। इस प्रकार अकारण प्रेम करनेवालों की एक जमात ही बन गयी है। जैसे मैं बोलना नहीं जानता, वैसे ही वे दूसरे भी बोलना नहीं जानते, लेकिन उनके दिलों में एक तड़पन है, जलन है, स्नेह है। 'रूखा-सूखा राम का टुकड़ा' लेकर एक-दूसरों से मिलने आते हैं। हम बहुत भाग्यशाली हैं कि ऐसे मनुष्यों का साथ हमें मिलता है। यह लाभ ही हमारे सम्मेलन की मुख्य प्राप्ति है।

अध्यक्ष के प्रति

आज आपके अध्यक्ष श्री केलप्पन्‌जी हैं। हम बहुत भाग्यशाली हैं कि ऐसों का साथ हमें मिलता है। यदि ऐसे लोगों का आधार नहीं मिलता तो केरल में वह काम नहीं होता, जो हम कर सके। शान्ति-सेना की कल्पना हमें केरल में ही सूझी थी। वहाँ अगर केलप्पन्‌जी हमारे साथ होकर सामने नहीं आते तो शान्ति-सेना नहीं बन सकती थी। केलप्पन्‌जी हमसे उम्र में चार-पाँच साल बड़े हैं। शान्ति-सेना का विचार, ग्रामदान, ग्राम-स्वराज्य का विचार उनको इतना आकर्षक लगा कि सब कुछ छोड़कर वे इस काम में कूद पड़े। जब मैं केरल में था, तब ढाई सौ ग्रामदान हुए थे, वे उन्हींकी बदौलत हुए थे। वे अगर इसमें कूद न पड़ते तो उतनी सफलता उस प्रान्त में प्राप्त करना मेरे लिए कठिन था। केरल छोड़ने के बाद ग्रामदान की संख्या दुगुनी हुई। केलप्पन्‌जी ने बहुत जोर लगाया। एक जमाने में उन्होंने रचनात्मक काम भी बहुत किया है। बहुत सालों से वे वह काम करते आये हैं। १९२५ में उनसे मेरा थोड़ा परिचय हुआ था। 'बायकॉट' के सत्याग्रह के समय बापू की आज्ञा से मैं वहाँ

गया था। तब उनसे सम्बन्ध आया था। जितने ही वर्षों से वे रचनात्मक कार्य में लगे हैं, वैसे ही दूसरे सामाजिक और राजनैतिक कार्य भी वे करते आये हैं। इन दिनों राजनैतिक क्षेत्र को छोड़ना सबसे कठिन त्याग होता है। परन्तु केलप्पन्‌जी ने वह त्याग करके इस आन्दोलन के लिए अपना समर्पण कर दिया है। इनके कारण ही केरल में आज थोड़ी-सी जमात खड़ी हुई है। वह थोड़ी-सी जमात भी ऐसी है, जो शान्ति के लिए मर मिटेगी, इसमें कोई शक नहीं है। पिछले दिनों केरल में जो अशांति हुई थी, वहाँ शांति की स्थापना में परमेश्वर ने उनको सफलता दे दी है। ऐसे महान साथी हमें मिले हैं,उनसे मार्गदर्शन मिल सकता है। यह हमारा बहुत बड़ा भाग्य है।

विगत वर्ष का सिंहावलोकन

मेरे प्यारे भाइयो, रोज हम जहाँ कुछ-न-कुछ बोलते ही हैं, वहाँ नयी बात क्यों रखें, सिवाय इसके कि मौन की महिमा प्रगट करें? शब्द से भी हम वह महिमा प्रगट कर सकते हैं।

हम समझते हैं कि यह वर्ष हमारे लिए एक आत्म-परीक्षण का और निरीक्षण का था। १९५७ तक हमने जाहिर किया था कि जो दिशा हमें सूझती है, उस दिशा में हम आगे बढ़ते जायँगे और अपना आत्म-परीक्षण भी करते जायँगे। जब-जब भी आत्म-परीक्षण किया, तब कुछ नयी बातें हमें सूझी हैं, वे हमने आपके सामने रखी हैं। जो असफलता हमें मिली है, उसकी पूर्ति के लिए आप काम में लगे हैं। जहाँ काम का सम्बन्ध आता है, वहाँ हमें कुछ-न-कुछ सूझता ही है। एक अवधि तक काम का अनुभव लोगों को आया। अब थोड़ा चिंतन, ध्यान करना बहुत जरूरी है। इसलिए एक साल से यह हमारे लिए ध्यान-काल चल रहा है। हम निरीक्षण करते हैं। इसीलिए हम कहते हैं कि यह आन्दोलन नहीं, आरोहण है। आरोहण (चढ़ाई) में हम एक-एक शिखर चढ़ने की कोशिश कर रहे हैं। ऋग्वेद में कहा है:

"यत् सानोः सानुं आरुहन्
भूरि अस्य कर्नत्वम्-तद् इन्दों अर्थ चेनति"
"यत् सानोः सानुं आरुहत्। भूमि अस्पष्ट कर्त्वम्
तद् इन्दों अर्क चेतति।"

आरोहण की यह एक प्रक्रिया है। एक शिखर से दूसरे शिखर पर जाते समय जब पीछे मुड़कर देखते हैं तो पता चलता है कि हम कितने ऊपर चढ़े, क्या-क्या गलतियाँ कीं। हम गलतियों को भी देखना चाहते हैं और लोक-दर्शन भी चाहते हैं। हमें अपने इस कार्य में टीकाकारों ने मदद पहुँचायी है। इस आन्दोलन पर जिन्होंने टीकाएँ कीं, उनसे भी हमें बहुत लाभ हुआ है। उन सब टीकाकारों का हम उपकार मानते हैं। क्योंकि उन्होंने दोष-दर्शन में हमें मदद पहुँचायी है। इन सब अनुभवों के प्रकाश में हमें जो सूझा है, वह आपके सामने है।

भूदान के पीछे इंग्लैण्ड की प्रेरणा

आज दुनिया में विचारों के प्रवाह बह रहे हैं। वे विचार-प्रवाह कुल दुनिया को जिसमें कि हम भी हैं, प्रेरित कर रहे हैं। अभी एक भाई इंग्लैण्ड से आये थे। वे भूदान के काम से प्रेरणा लेना चाहते थे। उन्होंने हमें कहा: 'हम आशा रखते हैं कि हिन्दुस्तान दुनिया को शांति की राह दिखायेगा।' इसपर हमने उनसे कहा कि हिन्दुस्तान दिखायेगा, लेकिन शान्ति की राह इंग्लैण्ड भी दिखा सकता है। उन्होंने मुझसे पूछा कि 'आपकी इस आशा के लिए क्या आधार है'? हमने कहा कि 'हिन्दुस्तान की मालकियत इंग्लैण्ड मानता था और वह मालकियत उसने छोड़ दी। उससे इंग्लैण्ड की नैतिक शक्ति बढ़ी है, ऐसा हम मानते हैं। इसी मालकियत छोड़ने के विचार के अधिष्ठान पर ही हमारा यह ग्रामदान का आन्दोलन चल रहा है। इस तरह इसका आरम्भ इंग्लैण्ड ने किया है।'

बहुत लोग समझते हैं कि इस आन्दोलन का आरम्भ १८ अप्रैल १९५१ को हैदराबाद स्टेट में हुआ था। परन्तु हम तो मानते हैं कि इसकी शुरूआत इंग्लैण्ड ने १५ अगस्त १९४७ के दिन की है और उससे हमको बड़ी स्फूर्ति मिली है। यह सुनकर उस भाई को बहुत आनन्द मिश्रित आश्चर्य हुआ। हमने उसे यह भी कहा कि हम आशा रखते हैं कि इंग्लैण्ड जैसा बलवान देश, जिसके पास बहुत बड़ा साम्राज्य था और जिसकी सत्ता कुल पृथ्वी पर थी, उसने यहाँ की सत्ता छोड़ दी तो अब वह बहादुरी के साथ दूसरी शक्ति का भी संधान कर सकता है। इसलिए हम चाहते हैं कि हिंसक शक्तियों का आश्रय छोड़कर इंग्लैण्ड आगे आये और शान्ति-सेना का काम उठा ले तो अहिंसा का प्रयोग हो सकता है। सेनामुक्ति का विचार ऐसा बलवान राष्ट्र ही ग्रहण कर सकता है। उस भाई से हमने यह भी कहा कि लन्दन जैसा स्फूर्तिदायी शहर दूसरा कौन-सा हो सकता है, जहाँ दुनिया भर के स्वातन्त्र्यप्रेमी लोगों को आश्रय मिला है। मेझिनी को वहाँ आश्रय मिला। डा० सनयातसेन वहाँ रहे। कार्ल-मार्क्स भी वहाँ रहे। गांधीजी भी वहाँसे प्रेरणा पाकर आये हैं। मेरी ये बातें सुनकर उस भाई को बहुत ही आनन्द हुआ कि हम उसके देश से ऐसी आशा रखते हैं। यह मैंने आपको इसलिए सुनाया ताकि मेरे विचारों से आप अवगत हो सकें।

जागतिक आन्दोलन

मैं अपने इस काम को राष्ट्रीय आन्दोलन मानता ही नहीं, जागतिक आन्दोलन मानता हूँ। जागतिक पृष्ठभूमि में ही उसका विचार मैं करता हूँ कि इसमें कौन से कदम उठाये जायँ। उसके लिए हमें सही तरीके ढूँढ़ने होंगे और यह हम तभी कर सकते हैं, जब हम जागतिक परिस्थिति में अपने को रख सकेंगे। इसीलिए हम "जय-जगत" का उद्‌घोष करते हैं। जब राज्य पुनर्गठन समिति की रिपोर्ट आयी, तब हिन्दुस्तान में बहुत ही संकीर्ण मनोवृत्ति का प्रदर्शन हुआ था। वह कर्नाटक में भी हुआ। जब हम वहाँ पहुँचे, तब संयुक्त कर्नाटक हो चुका था। हमने वहाँ लोगों से कहा कि यह संयुक्त कर्नाटक बनाया तो क्या हिन्दुस्तान से और दुनिया से अलग होने के लिए बनाया है? नहीं। यह तो संयुक्त विश्व बनाने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है। हमारा यह विचार वहाँ के लोगों को बहुत पसन्द आया। तभी हमें 'जय-जगत' का नारा सूझा। फिर तो वहाँके बच्चे-बच्चे 'जय-जगत' बोलने लगे। अब हम यहाँ राजस्थान में आये हैं, तब भी गाँव-गाँव के लोग हमें अभिवादन करने के लिए 'जय-जगत, जय-जगत' ही बोलते हैं। यह कोई छोटी बात नहीं है। आजादी के बाद हम दस-ग्यारह वर्षों में 'जयहिन्द' से 'जय-जगत' तक पहुँच गये हैं। कुल दुनिया में आज जो एक विचार, एक संकल्प काम कर रहा है, वह सारी दुनिया को एक करके ही रहेगा। अब राष्ट्र-राष्ट्र के भेद टूट जायँगे, नहीं रहेंगे। विज्ञान का बल हमारे विचारों के पीछे-पीछे है।

इन दिनों मैं जितना विज्ञान का बल महसूस करता हूँ, उतना इसके पहले कभी नहीं किया था। हमारे पीछे आत्मज्ञान का जितना बल है, उतना ही विज्ञान का भी बल है। विज्ञान संकुचित मनोवृत्ति को नहीं रहने देगा। वह इसके खिलाफ है। वह

आवाहन कर रहा है कि हे मानव! तुम एक हो जाओ या मिट जाओ। मैं दोनों के लिए तुम्हारी मदद करना चाहता हूँ। अगर तुम मिटना चाहते हो तो तुम्हें मिटा देने की शक्ति भी मेरे पास है और अगर तुम व्यापक बनाना चाहते हो तो उसके लिए भी मदद दे सकता हूँ। इस दृष्टि से हम देखेंगे तो हमें कुछ सूझेगा और हम एक बनने तथा व्यापक बनने के लिए भूदान, ग्रामदान के असाधारण विचार को समझेंगे।

विश्व-व्यापक दृष्टि

आस्ट्रेलिया से एक भाई हमसे मिलने के लिए आये थे। उन्होंने पूछा कि आस्ट्रेलिया के लिए भूदान का क्या सन्देश है? मैंने कहा कि 'चीन और जापान के लोगों को यह आवाहन करो कि भाइयो, आप लोग हमारे देश में आइये, हम आपका स्वागत करते हैं। यह भूमि आपका स्वागत करती है। आप यहाँ आकर रह सकते हैं। यहाँ ज्यादा भूमि पड़ी है। इसलिए आप यहाँ खुशी से आइये। यही भूदान का, विश्व-मानवता का संदेश है।' भूदान विश्वमानव बनाना चाहता है। अब वे दिन लद गये, जब हम अपने-अपने देश के बारे में अभिमान रखते थे और कहते थे कि 'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा।' क्यों? क्योंकि 'हमारा' है। यह हमारा न होता तो हम इसे सारे जहाँ से अच्छा नहीं कहते। यही हम जगह-जगह देखते हैं। फ्रेंच का हमने एक राष्ट्रीय गीत पढ़ा। फ्रेंच लोग अपने देश का गौरव गाते हैं तो उस गीत में इंग्लैण्ड, हिन्दुस्तान आदि दूसरे देशों की न्यूनता बतलाते हैं। वे कहते हैं कि हमारे देश में ऐसी-ऐसी कमियाँ नहीं हैं, जैसी इंग्लैण्ड में या हिन्दुस्तान में हैं। मैं देखने लगा कि हिन्दुस्तान की कौन-सी कमियाँ उन्होंने बतायी हैं, जो फ्रांस में नहीं हैं। उसमें लिखा है—हमारे देश में हिन्दुस्तान जैसे साँप नहीं हैं। खैर, इस तरह पहले अपने देश का गौरव तथा दूसरे देशों की कुछ न्यूनताएँ प्रदर्शित करने में लज्जत और शायद इज्जत भी मालूम होती थी, लेकिन आज वह नहीं मालूम होती। यह अपना एक सार्वराष्ट्रीय आन्दोलन है। इसकी पृष्ठभूमि में हमें काम करना है।

नये संदर्भ में सत्याग्रह

इन दिनों कभी-कभी लोग हमसे पूछते हैं कि कई छोटे-छोटे सवाल हैं, दुःख है, अन्याय है, इन सबके निवारण के लिए छोटे-छोटे सत्याग्रह क्यों नहीं चलने चाहिए? इसपर हम उन्हें कहते हैं कि बापू के जमाने में जो सत्याग्रह होते थे, यदि उन्हीं का आज हमने अनुसरण किया तो वैसा ही होगा, जैसे राणा-प्रताप और शिवाजी का अनुकरण करके आज हम सुरक्षा के लिए किले बनायेंगे। उस जमाने में राणा ने जैसे किले बनाये, वैसे बनाने से देश की रक्षा नहीं होगी। उन दिनों किले देश की रक्षा कर सकते थे। इन दिनों किले बनायेंगे तो बमवालों के बहुत नजदीक हो जायँगे, इसलिए हम स्थूल अनुकरण करने की भूल न करें।

लोग हमसे कहते हैं कि शिवाजी तथा राणाप्रताप को बहुत ज्यादा समय हो गया, किन्तु गांधीजी तो इसी जमाने में हुए हैं। इतने में क्या बहुत फर्क पड़ गया? मैं कहता हूँ कि इतने में तो बहुत-बहुत फर्क पड़ गया है। एक फर्क तो यह है कि वे पर-राज्य में काम करते थे और हम स्वराज्य में काम कर रहे हैं। दूसरा फर्क यह हुआ है कि वे अनियंत्रित सत्ता में काम करते थे और हम लोकशाही में काम कर रहे हैं। तीसरा फर्क जो मेरी दृष्टि में सबसे महत्त्व का फर्क है, वह यह कि अब अणु-युग का अवतार हो चुका है। गांधीजी के जमाने में अणु-युग शुरू हुआ था, आज उसका नया दर्शन हो रहा है। विज्ञान में जो शक्ति है, वह संहारक शक्ति है, रुद्र शक्ति है। वह रुद्रावतार हो सकता है और वह विष्णु का भी अवतार साबित हो सकता है। अब ऐसी एक विशाल शक्ति का अवतार हुआ है।

अब हमारे सामने यह प्रश्न नहीं है कि लोकशाही में सत्याग्रह का क्या स्वरूप होना चाहिए, बल्कि सबसे महत्त्व का विचार है कि विज्ञान के जमाने में सत्याग्रह का रूप क्या होगा? मेरे भाइयो, आज भी हम सत्याग्रही हैं। अगर हम सत्याग्रही नहीं हैं तो कुछ भी नहीं हैं। हमारे जो मार्गदर्शक थे, वे सत्याग्रह के गुरु नहीं थे तो और किस बात के थे? इसी बात के तो वे गुरु थे। उनसे हमें विद्या मिली है। उनके पीछे उनके विचार के प्रचार की जिम्मेवारी आप और हमपर आयी है। इसलिए अब हमें गम्भीरता पूर्वक चिंतन कर उस विद्या के विकास के बारे में सोचना होगा। हिंसा करनेवाले एक जगह बैठकर शस्त्रास्त्र फेंक सकते हैं और कुल दुनिया का संहार कर सकते हैं तो एक जगह बैठकर सत्याग्रह के स्वरूप-चिंतन के बारे में हम क्यों नहीं सोच सकते? मेरे सामने कोई मनुष्य असत्याचरण कर रहा हो तो उसके खिलाफ खड़े होते ही मेरे चेहरे में उसे करुणा दीखनी चाहिए। मेरी जबान में सामने वाले को माधुर्य तथा मेरे चाल-चलन में प्यार का दर्शन हो तो उसमें हृदय-परिवर्तन करना कठिन नहीं है। परन्तु सामने वाले को मेरी वाणी में, आँख में, चेहरे में, चाल-चलन में कुछ भी नहीं दीखता है तो उस सत्याग्रह का परिणाम क्या होगा? कोई ऐसी शक्ति सत्याग्रही के हाथ में होनी चाहिए कि घर बैठे-बैठे जैसे वे संहार कर सकते हैं, वैसे हम घर बैठे-बैठे सारी दुनिया का बचाव कर सकें। यह खोज का विषय है।

शस्त्रास्त्र बनाइये भी, बहाइये भी!

जो हाथ आज बम बनाने में संलग्न हैं, वे ही हाथ बमों को समुद्र में डाल दें, ऐसी प्रेरणा उनके हाथों को मिले। मैं नहीं जानता कि समुद्र में बम डालने से क्या होता है या उसका क्या करना पड़ता है? लेकिन जिन हाथों से पैदा हुआ है, वे ही हाथ उनकी समाप्ति करें, ऐसी प्रेरणा उनको हो। इस तरह उनके हृदय में प्रवेश करने की शक्ति हममें होनी चाहिए।

एक अमेरिकन भाई अमेरिका के लिए हमसे संदेश माँगने आये। मैं तो इस तरह कभी संदेश नहीं देता हूँ। मैंने कहा, अमेरिका को संदेश देने की धृष्टता मैं नहीं करूँगा। तो भी वे भाई कहने लगे कि आप कुछ बताइये। मैंने उनसे कहा कि 'आप लोग ये जो शस्त्रास्त्र बनाते हैं, वे खूब बनाने चाहिए। उसमें कोई कमी नहीं रखनी चाहिए, क्योंकि उसमें थोड़ा एम्पलायमेन्ट का सवाल हल होगा। परन्तु आगे जब क्रिसमस का दिन आये तो उस दिन हिम्मत के साथ भगवान ईसामसीह का नाम लेकर ये सारे शस्त्रास्त्र समुद्र में डाल दीजिये। नहीं तो आज क्या होता है? आपके शस्त्रास्त्र को रूस खत्म करता है और रूस के शस्त्रास्त्र को आप खत्म करते हैं। आपके जहाज रूसवाले डुबोते हैं और उनके जहाज आप डुबोते हैं। इस तरह परस्परावलम्बन का काम क्यों करना चाहिए? स्वावलम्बी बनो और अपने आप उसको तोड़ डालने का साहस करो।'

देहातों में माताएँ लड़कों से कहती हैं कि शौच के लिए अगर बैठना है तो पड़ोसी के घर के सामने बैठो और पड़ोसी के लड़के की माँ उसे कहती है कि तुम पड़ोसी के आँगन में शौच के लिए बैठो। ऐसा ही आज चल रहा है। मैंने उस अमेरिकन भाई को कहा कि अपने हाथों से शस्त्र बनाना और उसे डुबो देना, यह एक खेल हो जायगा। हम उसके शस्त्र का खण्डन करते हैं और वे हमारे शस्त्र का खण्डन करते हैं। इसके बजाय हम ही अपने शस्त्रों का विसर्जन करें।

हमें गणपति की कहानी याद है। बचपन में हमारे दादा गणपति उत्सव करते थे। हम चन्दन घिस-घिस कर अपने हाथों से गणपति की मूर्ति बनाते थे, उसकी पूजा करते थे और हमें उसमें बड़ा संतोष मालूम होता था। फिर १३-१४ दिन के बाद उस गणपति का तालाब में या कुएँ में विसर्जन करना पड़ता था। जब उसे कुएँ में डालने का समय आता तो हमें बहुत दुःख होता था, क्योंकि गणपति हमारे ही हाथों से बनाया हुआ होता था। हम अपने हाथों से चन्दन घिसते, मूर्ति बनाते, हमारे दादा उस सुन्दर मूर्ति की पूजा करते, आरती करते, इससे एक सद्भावना हमारे मन में निर्माण होती थी और आखिर एक दिन गणेशजी को डुबोने का दिन आता था तो हमें वह बात बहुत बुरी लगती थी। खैर, आवाहन के बाद उसका विसर्जन अपने ही हाथों से करना पड़ता था। इसका अर्थ यही है कि आपने उसे भगवान के तौर पर बनाया, याने भगवान को बनानेवाले हम हैं। यही हमारा शास्त्र सुझाता है कि भगवान को बनानेवाले तुम हो। इसलिए सबसे श्रेष्ठ देवता मानव है। इस तरह गणेश-पूजा की प्रक्रिया हमारे पूर्वजों ने हमें सिखायी है। तुम पूजा तो करो, पर तुम यह पहचानो कि तुमने इसको बनाया है। उसकी प्राणप्रतिष्ठा करनेवाले तुम हो! तुम्हारी ताकत से भगवान बना है। ऋग्वेद में यह मन्त्र आता है। 'अयं मे हस्तो भगवान्, अयं मे भगवत्तरः' यह मेरा हाथ भगवान है। फिर वही कहता है कि यह भगवान से भी श्रेष्ठ है। इससे श्रेष्ठ मन्त्र और कौन सा हो सकता है? जहाँ ऋषि कहता है कि मैं भगवान हूँ और दूसरे वाक्य में कहता है 'भगवत्तरः' याने भगवान से श्रेष्ठ हूँ। क्योंकि भगवान अव्यक्त है और हम व्यक्त हैं। हमारे हाथों से जो सेवा होगी, वह व्यक्त होगी और उसी सेवा के कारण उसका गौरव होगा। उस पूजा से भगवान का वैभव बढ़ गया है। यह समझने के लिए हमारे पूर्वजों ने गणपति-विसर्जन की प्रक्रिया हमें सिखलायी है। उसका राज पीछे खुला। वह प्रक्रिया आवाहन की प्रक्रिया है। उसमें आवाहन के बाद विसर्जन की क्रिया है। यही हमने उस अमेरिकन भाई को समझाया कि क्रिसमस के दिन कुल अपने-अपने शस्त्रास्त्र डुबो दीजिये। यही हमारा संदेश है।

आसक्ति को जलाना है

हमारे यहाँ होली का त्योहार आता है, वह किसलिए आता है? हमारी जिन वस्तुओं में आसक्ति हो, उनके जलाने की क्रिया के लिए आता है। जरा देखो और सोचो, सालभर में हमारे मन में क्या-क्या आसक्तियाँ होती हैं? हमारे मन में जो आसक्ति है, वह हम दूसरे को नहीं दे सकते, क्योंकि आसक्ति का दान नहीं हो सकता है। उस आसक्ति का अगर दान करोगे तो दान लेनेवाला भी स्वार्थी बनेगा। इसलिए होली के दिन उस आसक्ति को जलाना ही चाहिए। कानून के हक की बात करते हो, मालकी के कागज की बात करते हो, लेकिन इन सारे कागजों को होली के दिये में जला दिया जाय तो अपने देश में बड़ी ताकत, नैतिक ताकत पैदा होगी।

एक सरकारी मन्त्री आये थे। कुछ बात चल रही थी। वे कहते थे कि हमें चिन्तन-मनन के लिए समय नहीं मिलता है। मैंने कहा कि मनन के लिए समय नहीं मिलता है तो वह मन्त्री कहाँ रहा? वह तो तंत्री हो गया। उन्होंने कहा कि क्या करें, बहुत फाइलें होती हैं, बहुत रेकार्ड होता है, इसलिए समय नहीं मिलता है। मैंने कहा, रोज रेकार्ड रहता है तो ठीक है, लेकिन होली का भी दिन होता है कि नहीं? यदि होली के दिन हम अपनी फाइलें उसमें डाल दें तो कितना अच्छा प्रयोग होगा? दुनिया में कुछ त्योहार ऐसे होते हैं, जिस दिन हम अपनी आसक्ति जलाते हैं। सच्चे अर्थ में वही त्योहार होता है।

हमारी हस्ती और हमारा काम!

हम कहना चाहते थे कि इस आन्दोलन को केवल एक राष्ट्रीय भूमिका पर मत मानो। जागतिक भूमिका इसके पीछे है, ऐसा मानो तो उत्साह आयेगा। मेरी समझ में यह नहीं आता है कि कौन-सी ताकत मुझमें है? लोग मुझे कहते हैं कि आप तो बहुत कम खाते हैं। फिर इतना कैसे घूम लेते हैं? मैं उनसे कहता हूँ कि मैं आकाश खाता हूँ। आठ साल से मेरी यात्रा चल रही है। मेरा आकाश-सेवन चल रहा है। उससे मुझे ताकत मिलती है। इसलिए मरने के समय के पहले मैं कभी नहीं मरूँगा। लेकिन मुझे तो भास ही नहीं होता है कि मैं कुछ काम कर रहा हूँ। एक बहुत बड़ी ताकत, एक बहुत बड़ा विचार मुझे घुमा रहा है। मैं नहीं घूम रहा हूँ। आखिर हम और आप कौन हैं? बिलकुल नाचीज हैं। हमारी कोई हस्ती नहीं है। माणिक्यवाचकर के भजन का एक वचन मुझे याद है।

'नान यारु? चार आखिर ऐ नै।'

तमिलनाड़ का सर्वश्रेष्ठ कवि माणिक्यवाचकर है। वह कह रहा है, 'मैं कौन हूँ, मुझे कौन जानता है? मुझे कोई नहीं जानता है।' यह भजन मैंने पढ़ा तो मुझे लगा कि वह मुझे लागू हो सकता है। मुझे इस दुनिया में कौन जानता है? मैं कौन हूँ? मैं बिलकुल नाचीज हूँ और आप भी कौन हैं? अत्यन्त उपेक्षित लोग अगर कोई हैं तो आप हैं। नवबाबू की बात लीजिये। उन्होंने लगातार दो साल तक झगड़ा करके उड़ीसा के मुख्य मन्त्री पद से मुक्ति पायी और इस आन्दोलन में वे कूद पड़े। मैं उनकी तारीफ तो क्या करूँ। एक साल हुआ या सात-आठ महीने हुए, मुझे ठीक याद नहीं, परन्तु उनके त्याग की हद दर्जे की अपेक्षा हुई। इतनी गनीमत समझो कि उन्होंने मूर्खता की, ऐसा किसीने नहीं कहा।

आप जानते होंगे कि माणिक्यवाचकर पहले एक राज्य के मुख्य मन्त्री थे, फिर बाद में उन्होंने उस राज्य के मुख्य (प्रधान) मंत्री पद का त्याग किया था। यह कहानी मशहूर है। उसका जिक्र करते हुए मैंने एक देहात की सभा में कहा कि ऐसा ही भगवान बुद्ध ने किया। ऐसा ही माणिक्यवाचकर ने किया था और ऐसा ही काम नवबाबू ने किया है। अत्यन्त लाचारी से एक वाक्य मुझे जोड़ना पड़ा, क्योंकि उनके त्याग की इतनी उपेक्षा हुई, जो मुझसे सहन नहीं हुई। यह तो नवबाबू की बात हुई। एक हमारी लड़की है, अच्छी पढ़ी-लिखी। पहले प्रोफेसर थी। वह छोड़कर मेरे पास आयी। सात-आठ साल से मेरे साथ घूम रही और काम कर रही हैं। कुछ ग्रंथ भी उसने लिखे हैं। एक रचनात्मक कार्यकर्ता, गांधीवादी बुजुर्ग उसे सलाह दे रहे हैं कि अरे लड़की, तू यों क्या कर रही है? विनोबा बूढ़ा हो गया है, पर अभी तो तेरी जवानी का काल चल रहा है। इसलिए अभी से

सोच-समझकर अपने जीवन को स्थिर कर ले। कितनी हद दर्जे की उपेक्षा है यह! ऐसी हालत में भी आप लोगों ने काम किया है। मैं जानता हूँ कि भगवान काम चला रहा है। भगवान की ही कृपा है और इसलिए यश-अपयश की चिन्ता आप मत कीजिये। कुछ लोग कहते थे कि आपने इतना काम किया है, इतने ग्रामदान प्राप्त किये हैं, लेकिन अब आगे का काम करने के लिए आप फेल हो रहे हैं। मैंने कहा, मेरे फेल होने से आप पास होते हैं तो मैं पचास दफा फेल होने के लिए तैयार हूँ। उसमें मुझे बड़ी खुशी होगी। इस तरह मेरे फेल होने से आपका गौरव बढ़नेवाला है क्या? यह आप सोचें।

हमारे काम का चमत्कार

भूदान में चालीस लाख एकड़ जमीन मिली है और आठ लाख से ज्यादा बँटी है, उसमें अच्छी फसल पैदा होती है। बाकी जमीन बाँटना बाकी है, उसमें मदद की जरूरत है, बहुत मेहनत का काम है। लोग कहते हैं, उसमें कुछ ऐसी भी जमीन है, जिसपर रिक्लेम करना पड़ेगा। उसके लिए कुछ पैसा सरकार ने मंजूर किया है। जयप्रकाशजी ने मुझसे कहा—'बिहार के मंत्री कहते थे कि जो थोड़ा-सा पैसा इसमें आप लगाते हैं, उसके आधार से उत्तम फसल पैदा हो सकती है। वे मंत्री कहते थे कि बिहार में इतनी जमीन में इतनी फसल लाने के लिए हमें हजारों रुपये खर्च करने पड़ते हैं, लेकिन इतने कम खर्च में आपकी भूदान की जमीन में इतनी अच्छी फसल हो रही है!' इतना सब जानते हुए भी भूदान की जमीन को आबाद करने के लिए कितनी कंजूसी से केवल तीस लाख रुपये मंजूर किये हैं!

जहाँ आर्मी के लिए तीन सौ करोड़ रुपया खर्च होता है, वहाँ उत्पादन बढ़ाने के लिए इतना सा धन! हिन्दुस्तान पाकिस्तान के डर से सेना पर खर्च कर रहा है। 'परस्परं भावयन्ति' चल रहा है। रूस और अमेरिका भी एक-दूसरे के डर से मिलीटरी पर पैसा खर्च कर रहे हैं और हमें कहते हैं कि तुम्हारी बेसिक एजुकेशन बहुत महँगी है! इसलिए उसमें जरा खर्च कम करो, सस्ती बनाओ। हम कहते हैं कि अच्छी तालीम सस्ती होनी चाहिए। यह आपको किसने कहा? आपकी आर्मी के खर्च को जरा कम करो। वह तुम डर से कर रहे हो, यह गलत बात है। अच्छी तालीम महँगी जरूर होनी चाहिए, यह खूब ध्यान में रखो। मैं किसीपर टीका नहीं कर रहा हूँ, लेकिन कम-से कम करोड़ रुपये की तो माँग करनी चाहिए थी। सिर्फ लाख रुपयों की माँग की! कुबेर का दर्शन भिखारी को हुआ तो भिखारी ने तरकारी के लिए चार आने माँगे! कुबेर ने उसको दो पैसे दिये। वाह रे कुबेर! माँगा कितना और कितना दिया! कई लाख एकड़ जमीन पड़ती पड़ी है। उसमें भी माँगनेवालों ने बहुत जोर लगाकर कुछ लाख रुपये ही माँगे। मैंने कहा कि गलती तुम्हारी है। तुम जरा करोड़ माँगते तो क्या जाता? एक शून्य और चढ़ाते। इस समय शून्य की कीमत कुछ नहीं है। इन दिनों हजारों रुपयों की स्कीम हो तो वह स्कीम ही नहीं है, ऐसा माना जाता है। उसपर जितने ज्यादा शून्य लगायेंगे, उतनी ज्यादा बड़ी स्कीम होगी। शून्य चढ़ाने से ही स्कीम होती है, इसलिए मैंने कहा कि तुमने दस करोड़ की माँग क्यों नहीं की?

सत्याग्रह कैसे हो?

मैं कहना यह चाहता हूँ कि इस आन्दोलन को तराजू में डालकर नापना नहीं है। हमें यह नहीं देखना है कि हमने कितने ग्रामदान प्राप्त किये हैं, कितनी जमीन प्राप्त की है। हमें जागतिक दृष्टि से सोचना है। फिर आप सत्याग्रह की बात इस तरह नहीं करेंगे। विज्ञान-युग में छोटे सत्याग्रह नहीं होते हैं। सत्य तो बड़ा ही होता है। जो सबका ध्यान खींच सकता है। सबका ध्यान खींचने की प्रैक्टिस हमें करनी है। इसलिए हमें ऐसी युक्ति की खोज करनी चाहिए, जिससे कि सामनेवाला अन्दर देखेगा और उसके हृदय में धर्मक्षेत्र, कुरुक्षेत्र शुरू होगा। लड़ाई का क्षेत्र शुरू होगा। क्रिकेट का खेल खेलनेवाले कहते हैं कि ग्राउंड अगर परिचित हो तो खेलने में हमें अनुकूलता होती है और ग्राउंड अगर अपरिचित हो तो अच्छे खिलाड़ी होने पर भी हमें तकलीफ होती है। इसलिए किस ग्राउंड पर खेलते हैं, इसका महत्त्व है। इसी तरह हम किस ग्राउंड पर लड़ें, यह भी सोचने की बात है। इन दिनों ऐसा ही माना जाता है कि लड़ाई शत्रु के क्षेत्र में होनी चाहिए। ताकि हार होगी तो उसका नुकसान होगा और जीत होगी तो भी उसका ही नुकसान होगा।

सत्याग्रह की लड़ाई भी हम किस क्षेत्र में लड़ें? लड़ाई भी सामनेवाले के हृदयक्षेत्र में होनी चाहिए। उसके अन्दर यह महसूस होना चाहिए कि 'मैं गलती कर रहा हूँ, गलती कर रहा हूँ।' अगर हमें ऐसी कोई युक्ति सूझे कि अन्याय करनेवाले मनुष्य के हृदय में, धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र की लड़ाई शुरू हो जाय और वह सोचने लग जाय कि मैं गलती कर रहा हूँ, तभी सत्याग्रह की सफलता है।

सेंटपाल का उदाहरण

मशहूर कहानी है सेंटपाल की, जिसने क्रिश्चनिटी को खूब फैलाया। वह पहले कोई बड़ा महापण्डित था और क्रिश्चनिटी के विरोध में था। क्राईस्ट के शिष्य तो बिलकुल सीधे-सादे थे। कोई मच्छीमार था, कोई बुनकर था। मच्छीमार को क्राईस्ट ने कहा था "Come and follow me and I will make you fishers of men" मेरे पीछे आओ, मैं तुम्हें मच्छीमार नहीं, लेकिन मनुष्यमार बनाऊँगा। वह अपना जाल छोड़ कर क्राईस्ट के पीछे गया। क्राईस्ट के शिष्य एक के पीछे एक मारे जाते थे, सताये जाते थे और यह पाल जो पहले साल था, उनको बहुत सताता था। क्राईस्ट के अनुयायी कहीं जा रहे थे और उनको पाल सतानेवाला था। इसके पहले दिन की रात में साल को नींद नहीं आयी। सपने में भगवान आये और उससे बोले "Saul Saul, why do you persecute me?" मुझे क्यों सताते हो? साल ने पूछा, तुझको मैं कहाँ सता रहा हूँ? भगवान बोले, तू मेरे लड़के को सताता है तो मुझे ही सताता है। यह वाक्य उसने सुना तो दूसरे दिन उसका परिवर्तन हो गया। वह साल का पाल बना और क्राईस्ट का उत्तम, सबसे श्रेष्ठ शिष्य बना। उसके दिल में भगवान का प्रवेश हो गया। इस तरह सामनेवाले के हृदय में ही हमारा प्रवेश होना चाहिए। जो ऐटम बम और हाईड्रोजन बम बनाता है, जो उसकी योजना बनाता है, उसके हृदय में ही लड़ाई शुरू होनी चाहिए कि 'अरे मैं ठीक नहीं कर रहा हूँ, ठीक नहीं कर रहा हूँ, ठीक नहीं कर रहा हूँ।'

असफलताओं से अपने आपको अपमानित न करें

मनु ने कहा है कि असफलताओं से अपने आपको अपमानित मत करो। मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि हमें जो असफलता मिली है, वह अत्यन्त उज्ज्वल है और वह अगर नहीं मिली है तो उज्ज्वल है ही। इसलिए हम अपनेको कभी अपमानित

न करें। हम यह समझ लें कि यह काम हम नहीं कर रहे हैं। हम नाचीज हैं। कोई दूसरा ही चला रहता है, हिला रहा है, बुला रहा है, घुमा रहा है। हमारा इस दृष्टिकोण के प्रति विश्वास हो तो मैं आपको यकीन दिलाना चाहता हूँ कि हमारी यह जमात हमीर बनेगी और निःसंदेह दुनिया को परिवर्तित करेगी। यह सारी शक्ति भगवान की है। गति-प्रगति प्रधान सारी प्रवृत्ति भी उसकी लीला है। वह हम जैसे नाचीज और कमजोर औजारों से काम करना चाहता है। ऐसी भावना, ऐसा विश्वास लेकर आप काम कीजिये, परीक्षण कीजिये, निरीक्षण कीजिये, गलतियाँ सुधारिये और ध्यान में रखिये कि बावजूद इन सब गलतियों के एक पवित्र हाथ हमारे सिर पर है।

मेरे प्यारे भाइयो, इस व्याख्यान के संदर्भ में अगर कोई समतोल वाक्य न कहा हो तो क्षमा मैं किससे माँगू? भगवान के पास ही मैं अपनी गलती रख देता हूँ। उसके लिए वही जिम्मेवार है। वह मुझसे जो बुलवायेगा, वही मैं बोलूँगा।

●●●

जामनगर (हालार) २७-११-'५८

महिला सभा में

स्त्री-शक्ति आगे आये और समाज को बचाये

बहनों को देखकर मुझे जो आनन्द होता है, उसका मैं शब्दों में वर्णन नहीं कर सकता। बचपन से लेकर अब तक मेरा एक ही बहन से परिचय हुआ है और वह मेरी माँ। आप सबको भी मैं इसके सिवा दूसरे किसी रूप में देख नहीं सकता, भले ही सामने कोई नन्ही बालिका हो या बूढ़ी दादी। सभी स्त्रियों को मैं एक ही रूप में देख सकता हूँ कि आप सभी मेरे मातृ-स्थानीय हैं।

साढ़े सात वर्षों से मेरी जो यात्रा चल रही है, उसमें बहनों ने बहुत काम किया है। फिर भी पुरुषों के पैमाने में वे अधिक काम नहीं कर सकीं। क्योंकि जमीन के मालिक पुरुष ही होते हैं, वह पुरुषों के नाम ही होती है। अतएव अभिक्रम उनका ही रहेगा। जब ग्रामदान की बात चले, तब बहनों से जरूर पूछा जाता है, पर चर्चा वगैरह तो पुरुष आपस में ही करते हैं और बहनों को राजी कर ग्रामदान घोषित कर देते हैं। ग्रामदान में बहनों की सम्मति आवश्यक थी और उन्होंने वह सम्मति दे दी, इसीलिए ग्रामदान हो पाये हैं। लगभग चार हजार ग्रामदान हुए। इतना होते हुए भी इस कार्य में मुख्य भाग पुरुषों का ही कहा जा सकता है। अतः स्त्रियों के लिए विशेष काम की जरूरत थी। आखिर परमेश्वर ने एक काम सुझा दिया। उसे आप जानती ही हैं। सर्वोदय-पात्र का काम विशेष रूप से स्त्रियाँ ही कर सकती हैं। वे अपने बच्चों को शिक्षण देकर उनके हाथों से सर्वोदय-पात्र में रोज अनाज डलवा सकती हैं। इससे जहाँ बच्चों को सत्शिक्षा प्राप्त होती है, वहीं समाज की प्रतिष्ठा भी बढ़ती है। अतः बहनों का कर्त्तव्य है कि वे अपने बालकों को सर्वोदय-पात्र द्वारा देश की शान्ति और अहिंसा की शिक्षा दें।

शान्ति की मूर्ति स्त्री

यह सच है कि शान्ति की मूर्ति नहीं गढ़ी जा सकती, पर मान लें कि उसे गढ़ना ही हो तो वह स्त्री की मूर्ति ही हो सकती है। काम, क्रोध, मद, मत्सर आदि विकार जैसे पुरुषों में होते हैं, वैसे ही स्त्रियों में भी हो सकते हैं। इन बातों में कोई एक-दूसरे से नीचा-ऊँचा हो, ऐसी बात नहीं है। ममता, प्रेम आदि गुण स्त्रियों में हैं और पुरुषों में भी। फिर भी शान्ति की मूर्ति स्त्री ही हो सकती है। क्योंकि वह मातृ-स्थान है। वह सारे समाज की तारिणी शक्ति है। जो तारिणी शक्ति होगी, वही शान्ति की मूर्ति हो सकती है। इन दिनों जमाना बहुत ही भयानक आ गया है। आज सारी दुनिया की स्थिति बड़ी ही भयानक है। इससे बचने का उपाय मुझे एक ही दीख रहा है और वह है स्त्री-शक्ति आगे आये और समाज को बचाये।

आज तक पुरुषों ने दुनिया में जैसा कारोबार चलाया, उसके फलस्वरूप बड़े-बड़े दो विश्वयुद्ध हो गये और तीसरे विश्वयुद्ध का ज्वालामुखी कब फूट निकलेगा, कहा नहीं जा सकता। बड़े-बड़े राष्ट्रों ने अब ऐसे-ऐसे शस्त्रास्त्र बना लिये हैं, जिनसे सारी दुनिया का संहार होने की आशंका उत्पन्न हो गयी है। ऐसी स्थिति में स्त्रियाँ पहले की तरह पुरुषों पर भरोसा रखकर बाल-बच्चों को सँभालकर तथा मात्र घर अगोर कर ही समाधान नहीं मान सकतीं। पुरुष अपना कारोबार ठीक-ठीक चलाते तो कोई बात न थी, लेकिन वे उसमें विफल हो गये हैं, यही कहना पड़ता है।

आजकल पुरुष अपनी इस विफलता में समानता के नाम पर स्त्रियों को भी हिस्सा बँटाने कहते हैं। इन दिनों यह कहा जाता है कि स्त्रियों को समानाधिकार चाहिए। पुरुषों की बराबरी करनी चाहिए। तदनुसार उनकी पलटनें भी बनायी जाती हैं। अमेरिका आदि में पुरुष सिपाहियों की तरह स्त्रियाँ भी सिपाही बनती हैं और हाथ में बन्दूक लेकर काम करती हैं। यह बड़ा ही भयानक काम चल रहा है। अगर स्त्रियों के हाथों में भी बन्दूकें आ जायँ तो फिर समाज का रक्षण कौन करेगा, इस सवाल को कोई हल नहीं कर सकता। पुरुषों को गलत कामों से पीछे खींचना ही स्त्रियों का काम है। अपने नैतिक बल का उपयोग कर समाज में शान्ति स्थापित करने की हिम्मत स्त्रियों को करनी चाहिए।

सर्वोदय-पात्र का काम करें

शान्ति-सेना का काम भी स्त्रियाँ बहुत अच्छे ढंग से कर सकती हैं। उसका आधार सर्वोदय-पात्र होगा। यदि वह हर घर में रखा जाय तो समाज शान्ति-परायण होगा।। वे रोज बच्चों से शान्ति का व्रत करायें, शान्ति के नाम पर एक मुट्ठी अनाज डलवायें तो बच्चों के मन में शान्ति का बीजारोपण होगा। फलतः जब वे बड़े होंगे तो उनमें शांति-शक्ति फलित एवं पुष्पित हो उठेगी। यह काम स्त्रियाँ ही अच्छी तरह कर सकती हैं। लेकिन थोड़े-से सर्वोदय-पात्र हो जायँ तो उसमें मुझे समाधान नहीं हो सकता, यहाँ डेढ़-पौने दो लाख की जनसंख्या है तो ३० हजार परिवार हुए। अतः यहाँ ३० हजार सर्वोदय-पात्र होने चाहिए। ऐसा व्यापक काम स्त्रियाँ उठा लें। घर का काम करने के बाद जो थोड़ा समय मिले, उसमें वे यही काम करें। जगह-जगह जायँ और समाज में इस विचार को प्रचारित करें। किसी भी घर के बच्चे अशिक्षित न रहें, उन्हें अच्छा शिक्षण मिले। मैं समझता हूँ कि कोई भी घर इसके लिए इनकार न करेगा। मान लीजिये, कोई भी घर इतना गरीब हो कि मुट्ठीभर अनाज डालना भी उसके लिए सम्भव न हो तो उससे पड़ोसी कहेगा कि आपके लिए मैं सर्वोदय-पात्र रखता हूँ। आप इसके लिए अनुमति दें तो इस काम में आपकी सहानुभूति मान ली जायगी। आप इतना काम कर सकें तो दुनिया में एक नयी शक्ति निर्माण होगी।

●●●

प्रार्थना-प्रवचन

बावला (अहमदाबाद) १८-१२-'५८

प्रार्थना के स्वरूप का मूल्यांकन

अहमदाबाद के स्वागत-कार्यालय की ओर से 'पारिवारिक दैनिक प्रार्थना' नाम से एक प्रार्थना प्रकाशित है। आज यहाँके बच्चों ने उसे ही गाया, जिसे आप लोगों ने सुन ही लिया है। बड़ा ही आकर्षक आयोजन था वह! मैं चाहता हूँ और सिफारिश भी कर रहा हूँ कि इस प्रदेश के हर घर में यह प्रार्थना चलायी जाय।

इस प्रार्थना में ऐसी कोई बात नहीं, जो किसी भी धर्मवाले के लिए बाधक हो। इसमें पहले तो स्थितप्रज्ञ के लक्षण हैं—जिसकी बुद्धि स्थिर हो गयी है, ऐसे पुरुष के लक्षण हैं। हम सभी चाहते हैं कि हमारी बुद्धि, हमारा समाज, हमारा देश और अखिल विश्व स्थिर रहे। इसलिए स्थितप्रज्ञ के ये लक्षण, ये श्लोक अखिल विश्व के लिए उपयोगी हैं।

उसके बाद इसमें एकादश व्रत रखे गये हैं। अहिंसा, सत्य आदि एकादश व्रतों का मानव और समाज पालन करेंगे तो ये व्रत भी उनका पालन (रक्षण) करेंगे। इनमें मानव और समाज के रक्षण की शक्ति भरी पड़ी है। इन व्रतों के आचरण के फल-स्वरूप ही बापू जैसे व्यक्ति महात्मा बन गये। यही सब सन्तों के जीवन का सार है। ये व्रत केवल विरक्त या संन्यासी के लिए ही नहीं हैं, परन्तु सर्वसाधारण के लिए भी हैं और पूरे समाज के लिए भी। ये अत्यन्त उपयोगी हैं। आजतक लोगों ने जिस समाज-शास्त्र और धर्म-शास्त्र का चिन्तन किया, उन सबका सार यही है। ये व्रत हम लोगों के लिए 'प्रकाश स्तम्भ' हैं।

ईश्वर अल्लाह में सबका समावेश

इस प्रार्थना में सभी धर्मों की प्रार्थना भी संकलित की गयी है। हम भगवान का नाम लेते ही हैं। इसमें भी इस्लाम, पारसी ईसाई, बौद्ध, जैन, शैव, शाक्त, वैष्णव, गुरु नानक (सिख) आदि सभी मुख्य-मुख्य धर्मों एवं उनके पंथों के नाम संगृहीत हैं। प्रसिद्ध चीनी दार्शनिक 'ताओ' का भी नाम रखा गया है। इस तरह सारी दुनिया में भगवान के जितने नाम लिये जाते हैं, उनका सार इसमें है। आज के युग के लिए इसकी अत्यन्त आवश्यकता है। भगवान के नामों को लेकर दुनिया में जो झगड़े चलते हैं, उससे बढ़कर अनुचित क्या हो सकता है? भगवान हम सभीके पिता हैं। उनके नामों से सर्वत्र प्रेम पैदा होना चाहिए। लेकिन उसकी जगह भगवान का नाम लेने का मौका आने पर एक 'महादेव' कहने लग जाय और दूसरा 'मिया' तो उस मिया और महादेव का मेल ही कैसे हो सकेगा? उन दोनों का मेल बैठाना बहुत जरूरी है। इसीलिए तो गांधीजी ने 'ईश्वर अल्ला तेरो नाम' जपना शुरू किया।

एक बार एक पारसी भाई मुझसे मिलने आये थे। कहने लगे कि 'गांधीजी की प्रार्थना में ईश्वर और अल्ला के नाम आते हैं। लेकिन जरथुस्त ने भगवान का "अहुर मज्द" नाम सिखलाया था, वह इस प्रार्थना में सम्मिलित नहीं किया गया है।' मैंने कहा: 'जिस भगवान के भक्त लड़ाई-झगड़ा करते हैं, उन्हींके नाम इस प्रार्थना में लिये जाते हैं। आप लोग तो लड़ाई-झगड़ा करते नहीं, फिर आप लोगों के भगवान के नाम कौन पूछेगा? अगर आप लोग भी कुछ जोर लगायें और समाज में शान्ति भंग होने जैसा काम करें तो आपके ईश्वर का भी पता चलने लग जाय।' यह मैंने उस भाई से विनोद में कहा था। लेकिन सच तो यह है कि ईश्वर और अल्लाह में सभी धर्मों और सभी नामों का समावेश हो जाता है, यही समझ कर बापू ने 'ईश्वर-अल्ला' यह शब्द रखा। ईश्वर अल्ला का अर्थ ईश्वर और अल्ला, इतना ही नहीं है, क्योंकि इन दोनों नामों के पेट में भगवान के शेष सभी नाम आ जाते हैं। यहाँ कई विद्यार्थी बैठे हुए हैं। संस्कृत में एक 'समाहार द्वन्द्व' नामक समास हुआ करता है। 'रामकृष्ण' इस पद में समाहार द्वन्द्व है, इसी तरह 'ईश्वर अल्ला' में भी है। ईश्वर अल्ला ये दो ही नहीं, इनके पेट में ईश्वर के सभी नाम हैं।

एक बार एक मुसलमान भाई आये और कहने लगे कि 'बापू ने अपनी प्रार्थना में अल्लाह का नाम रखा था। लेकिन आपने तो अपनी प्रार्थना से अल्लाह को निकाल डाला और उसकी जगह 'रहीम ताओ' रख दिया है।' मैंने कहा: 'रहीम नाम अल्लाह के लिए ही रखा है। अरबी के इस 'रहीम' शब्द का अर्थ है रहम करनेवाला, जब कि 'अल्लाह' का अर्थ सिर्फ परमेश्वर ही होता है, दूसरा कुछ नहीं। उसमें से उसके गुण का अर्थ नहीं निकलता, लेकिन रहीम करने से परमात्मा का महान गुण करुणा प्रकट होता है। मुहम्मद पैगम्बर जब भगवान का नाम लेता तो हमेशा रहीम-रहमान का ही नाम लेता था। एक सभा में लोगों ने उनसे सवाल पूछा कि पैगम्बर साहब! आप तो कहा करते हैं कि 'परमात्मा एक ही है और वह अल्लाह है। फिर आपके व्याख्यानों में यह दूसरा रहमान कहाँसे टपक पड़ता है?' मुहम्मद साहब ने जवाब दिया 'कुरान में यह वाक्य आता है कि जो अल्लाह है, वही रहमान है और जो रहमान है, वही अल्लाह है।' याने ईश्वर के असंख्य नाम दुनिया में हैं। उनमें से रहीम, रहमान नाम, जो बड़ा से बड़ा नाम था, मुहम्मद साहब ने स्वीकार किया।

प्रार्थना में तीन दृष्टियों का समावेश

इसका अर्थ यह हुआ कि इस्लाम करुणा का धर्म है और कारुण्य को उसका रूप मानता है। इसी तरह ईसाई लोग प्रेम को भगवान का रूप मानते हैं। भागवत धर्मवाले भक्त भी प्रेम को भगवान का रूप मानते हैं। वे कहते हैं कि भगवान अनिर्वचनीय प्रेम रूप है, जब कि उपनिषदें, हिन्दुस्तान के अन्य दर्शन और जैनधर्म कहता है कि परमात्मा का बड़ा से बड़ा लक्षण 'सत्य' है। इस तरह सत्य प्रेम और करुणा में सभी धर्मों का सार आ जाता है।

इस प्रकार जो सर्व धर्म स्मरण किया जाता है, उसपर एक बहुत बड़ा आक्षेप भी है और वह आक्षेप करनेवाले कितने ही ईसाई तथा मुसलमान मुझे मिले हैं। वे कहा करते हैं कि 'हम तरह बहुत से धर्मों की यह जो खिचड़ी बनायी गयी है, वह हमें नहीं जँचती।' मैं कहा करता हूँ कि अगर आपको केवल खिचड़ी अच्छी नहीं लगती तो उसे कढ़ी के साथ खा सकते है। वास्तव में खिचड़ी जैसी पौष्टिक खूराक दूसरी हो ही नहीं सकती। गुजरात के बहुत से घरों में दिन में एक बार तो खिचड़ी ही खायी जाती है। खिचड़ी में बहुत सा लाभ है! चावल में विटामीन कम पड़ता है, जिसकी पूर्ति दाल कर देती है, जब कि अकेली दाल खायी जाय तो वह नुकसान करती है। इस तरह यह खिचड़ी भी एक रसायन है और उसका भी अपना विशेष लाभ है। यों तो भगवान के अनन्त नाम हैं, पर अमुक-अमुक नाम अमुक-अमुक गुणों के द्योतक हैं। ऐसे अनेक नामों में से कुछ

चुनकर इसमें रखे गये हैं, जिससे अब तक के पूरे भक्त समाज का एकत्रित पुण्य इसमें आ जाय।

समग्र दृष्टि से विचार करने पर इस प्रार्थना में तीन चीजें आ जाती हैं। एक तो स्थितप्रज्ञ के लक्षण विषयक दर्शन, दूसरी, प्रकाश स्तम्भ जैसे एकादशी व्रत और तीसरी, भगवान के गुण-वाचक नाम, जिसमें सभी सन्तों का समावेश हो जाता है। इसलिए मेरी आप सबसे सिफारिश है कि हर कोई इस पर चिन्तन करे और अपने-अपने घरों में यह पुस्तक रखे। इसका मूल्य भी अधिक नहीं है, सिर्फ तीन नये पैसे हैं। इस बावला के सभी घरों में यह पुस्तक पहुँचनी ही चाहिए।

बालक जैसे सरल बनें

ईसामसीह से पूछा गया था कि 'ईश्वर के राज्य में किसका प्रवेश हो सकता है?' उनके नजदीक एक बच्चा बैठा था। ईसा ने उसे उठाकर टेबुल पर बैठा दिया और श्रोताओं से कहा कि 'जो लोग बच्चे जैसे होते हैं, उन्हींको वैकुण्ठ में प्रवेश प्राप्त होता है।' इस तरह उन्होंने बहुत ही सुन्दर दर्शन कराया। जिनकी बालकों जैसी मनोवृत्ति होगी, वे ही ईश्वर के राज्य में प्रवेश पा सकेंगे। अपने शास्त्रों में भी ऐसे ही वचन पाये जाते हैं, जिनमें कहा गया है कि पण्डित नहीं बनना चाहिए। पाण्डित्य प्राप्त कर और उसे पचाकर बालभाव से रहना चाहिए। जिस तरह बालक निर्दोष होता है, उसी तरह बनकर ईश्वर के पास पहुँचना चाहिए। ज्ञानोत्तर अज्ञान भी सीखना चाहिए। ज्ञान तो प्राप्त करना ही चाहिए, लेकिन अन्तिम प्राप्तव्य वस्तु ज्ञान नहीं, अज्ञान ही है, जो ज्ञान के परे की बात है। उस समय यह भास भी न होना चाहिए कि मुझमें कुछ ज्ञान है। वह अवस्था ज्ञान से परे की अवस्था कहलाती है। ज्ञान के परले पार अज्ञान है। वह महान अज्ञान हमें प्राप्त करना चाहिए। याने हम सबको बालक बनना चाहिए। साथ ही जो बालक हैं, उन्हें बालकपन खोना ही चाहिए। वे जन्म भर बालक ही रहें, जैसे कि सनत्कुमार थे। जो बालपन गँवाता है, वह जीवन का अमूल्य रत्न खो देता है, यही समझना चाहिए।

आप देखते हैं कि बालक धूप, बारिश और ठंड में घूमते हैं। खूब घूमना बच्चों का काम है। जो लोग घर कैद होकर पड़े रहते हैं, वे बाहर समाज की सेवा के लिए आयें तो बालक जैसे हो जायँगे। बालकों के लिए वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, हेमन्त शिशिर आदि सभी ऋतुएँ रमणीय होती हैं। बालकों का लक्षण ही यही है। सामवेद में इस आशय का एक मन्त्र बड़ा ही मार्मिक है। जी चाहता है कि उसे आप लोगों से गवाऊँ। लोग ग्रीष्म को बुरा मानते हैं। लेकिन जब ग्रीष्म से जमीन से तप्त हो उठती है, तभी बादल आते हैं, ऐसा वैज्ञानिक कहते हैं। नहीं तो निष्प्राण मिट्टी में बोने पर कुछ भी न उगेगा। इसलिए बच्चों को खूब घूमना चाहिए। माताएँ बच्चों से कहती हैं कि 'धूप में मत घूमो, बीमार पड़ जाओगे।' सच पूछें तो इस तरह वे उन्हें कमजोर ही बनाती हैं। मैं तो कहूँगा कि बच्चों को धूप व बारिश में घूमना ही चाहिए। वर्षा में जब सारी सृष्टि श्यामल हो जाती है, आकाश पृथ्वी से मिलने के लिए रमणीय रूप लेकर आता है, तब आपका दर्शन करने के लिए बालक बाहर न निकलें तो फिर कब निकलेंगे? यही कारण है कि मनु ने उन्हें ऐसे समय अध्ययन से छुट्टी देने के लिए कहा है। मनु की यह कितनी सहृदयता है! वर्षा के हजार-हजार बिन्दु भगवान के हजार हाथ हैं। उन हाथों से भगवान हमें आलिंगन दे रहा है, यही समझना चाहिए। इसलिए वर्षा में खुले बदन घूमने में कोई हानि नहीं है, ऐसा मेरा अपना अनुभव है। इस तरह सभी लोग घूमने निकल पड़ें तो बहुत ही जल्दी राष्ट्र की उन्नति हो सकती है।

कामना और ममता से मुक्त हों

उन्नति की आकांक्षा रखनेवाले समस्त लोगों को घर-द्वार और खेत आदि सभी तरह की कामनाएँ छोड़कर निकलना चाहिए। जो व्यक्ति निःस्पृह होकर घूमेगा, वही यह काम कर सकेगा। पूछा जाता है कि सर्वोदय का काम ७ वर्षों तक चला और कब तक चलेगा? लेकिन कोई यह नहीं पूछता कि अब तक दिन में तीन-तीन बार खाता आ रहा हूँ और अभी कब तक खाते रहना होगा? इसलिए स्पृहा छोड़कर काम करना चाहिए। साथ ही अहंकार नहीं होना चाहिए। बाबा से पण्डितजी ने पूछा कि 'आप अब तक कितने घूमे?' मैंने कहा: 'बीस हजार मील।' देखा जाय तो यह कितना बड़ा अहंकार हो जाता है। लेकिन यह तो बाबा नहीं घूमा, उसके पैर घूमे। बाबा से उसका क्या संबंध है? इसलिए इसमें किसी तरह का अहंकार नहीं होना चाहिए। यह सारा काम स्वाभाविक ही होना चाहिए। क्या कोई स्वाभाविक काम का भी कुछ हिसाब रखता है? इसलिए किसी तरह का अहंकार न कर स्वाभाविक जीवन का विचार करना चाहिए।

इसी प्रकार ममता भी छोड़ देनी चाहिए। मेरा घर, मेरी जमीन, मेरी स्टेट, ऐसा नहीं मानना चाहिए। यह सभीकी मालकियत का है। अपने पास जो कुछ हो, वह समाज को दे देना चाहिए। जमीन सारे समाज की कर देनी चाहिए। इसलिए मालकियत की बातें छोड़कर लोगों के पास पहुँचें और उनसे ग्रामदान करने के लिए कहें। किन्तु इससे पहले आपको भी मालकियत छोड़नी होगी। तभी आपके कहने का कुछ असर होगा। जब ऐसे करेंगे, तभी भारत में शान्ति होगी। गीता में लिखा है कि जो सभी तरह की कामनाओं से मुक्त होता है, हे भारत! वही शान्ति पाता है। भारत अर्जुन का भी एक नाम है, पर भारत देश को भी संबोधित कर यह कहा है, यह समझना चाहिए। भारत का अर्थ है, जो सबका भरण-पोषण करता है। हमारे देश में मुसलमान, यहूदी, ईसाई, हिन्दू, बौद्ध, सिख, जैन सभी प्रेम पूर्वक रहते हैं! भारत माता प्रेम से सबका भरण-पोषण करती हैं। इसीलिए इसका नाम भारत है। इस तरह यह विश्व का एक छोटा-सा प्रतिनिधि ही है। अतएव यह बात सारे विश्व को लागू है कि कामना से मुक्त जो नर निःस्पृह होकर घूमते हैं, वे अहंता और ममता त्यागते हैं, शान्ति पाते हैं। ●●●

अनुक्रम

१ आन्दोलन का उज्ज्वल अतीत और उज्ज्वल भविष्य
सर्वोदयनगर २७ फरवरी '५९ पृ० २३७
२. स्त्री-शक्ति आगे आये और समाज को बचाये
जामनगर २७ नवम्बर '५८ ,, २४२
३. प्रार्थना के स्वरूप का मूल्यांकन
बावला १८ दिसम्बर ,, ,, २४३

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ-प्रकाशन, राजघाट, काशी द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित
फोन : १२८५ तार—प्रकाशन, राजघाट, काशी।